❖ अमरावती, गुरुवार १४ दिसंबर २०२३ ❖वर्ष १४ ❖अंक २५ ❖पृष्ठ ८ ❖मूल्य १०/– ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2021-2024 डाक : शुक्रवार – शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

विशेषांक

अंबानगरी में अभूतपूर्व

विशेष संपादकीय प्रयास
सुभाषचंद्र जे.दुबे
मो.९४२३४२६१९९

राणा दम्पति का एक और अभूतपूर्व कदम, पं.प्रदीप मिश्रा की कथा सुनने लाखों भक्त

क़हते हैं कि जब कोई व्यक्ति जो ठानता है, वह होता रहता है तो यह समझना चाहिए कि प्रभु की उस पर अपार कृपा है. विधायक रवि राणा और सांसद नवनीत राणा के साथ ही उनके मार्गदर्शक चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया, सुनील राणा की यह चतुर्भुज मंडली हजारों कार्यकर्ताओं के साथ पिछले कई वर्षों से यही साबित कर रही है. भारत के भक्तों में सबसे ज्याद लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय शिव महापुराण कथाकार तथा भोलेनाथ के अनन्य भक्त पंडित प्रदीप मिश्रा की अमरावती में शिव महापुराण कथा भी किसी चमत्कार से कम नहीं है. जितने कम समय में इसका आयोजन हो रहा है और लाखों भाविकों के शामिल होने वाली स्थिति है, वह अपने आप में भोलेनाथ के चमत्कार से कम नहीं है.

देश ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में अपनी कथाओं के साथ ही टोटकों के लिए सुख्यात पं.प्रदीप मिश्रा के हर शब्द सुनने के लिए लाखों लोग अगर आते हैं तो मुझे लगता है कि यह भी उन पर भोलेनाथ की अपार कृपा ही है. वर्ना अमरावती में अभी तक होने वाली कथाओं में 20-30 हजार तक का ही रिकार्ड रहा है.यहां तो कथा को कामयाब बनाने के लिए इतने स्वयंसेवक दिन-रात भोले की कृपा से अनथक प्रयास कर रहे हैं.

हनुमान चालीसा को लेकर भारत ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में चर्चित होने वाले राणा दम्पति की पहल, सुनील राणा, चंद्रकुमार जाजोदिया के साथ ही हजारों भोलेभक्तों की मेहनत का इसे फल मानने में कोई गुरेज नहीं है. यह कथा अमरावती के धर्म इतिहास में अभूतपूर्व रहने के साथ ही फिलहाल तो न भूतो न भविष्यती कहना गलत नहीं होगा. महाराजजी को निमंत्रण देने गई टीम के सदस्यों में अजय मोरय्या सहित अन्य भी भाग्यशाली ही कहे जाने चाहिए, जिनके प्रथम दर्शन हुए. कहते हैं कि अकेला चना

शेष पेज 2 पर

संपादकीय .....

अंबानगरी है धर्मनगरी

अतिथि संपादक

हम सभी भाग्यशाली हैं जो अंबानगरी में अंतर्राष्ट्रीय कथाकार पं. प्रदीप मिश्रा की शिव महापुराण कथा हनुमानगढ़ी में सुनने के योग के साथ ही राणा दम्पति के तीन ऐतिहासिक रिकार्ड का साक्षी होने का मौका मिल रहा है. इसमें पहला रिकार्ड अमरावती में पंडित प्रदीप मिश्रा की लाखों भाविकों की मौजूदगी वाली कथा सुनने,संकटमोचन हनुमानजी की सबसे ऊंची 111 फुट की प्रतिमा के साथ ही अंबानगरी के इतिहास में लाखों भाविकों की उपस्थिति के तीन रिकार्ड के साक्षी बने हैं. सर्वप्रथम विदर्भ स्वाभिमान की इस आयोजन और इसके इतिहास के लिए राणा दम्पति,समस्त आयोजन समिति और सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं. अंबानगरी ऐतिहासिक, पौराणिक नगरी के साथ ही गंगा-जमुनी संस्कृति वाली नगरी रही है. इन्सानों में परस्पर प्रेम का दर्शन कोरोना महामारी के दौरान यहां हुआ. धार्मिक मामले में अमरावती जिला सदैव अग्रणी रहा है. मां अंबादेवी-एकवीरा देवी मंदिर, भगवान श्रीकृष्ण के चरणों से पुनीत श्रीकृष्ण मंदिर, माता रूक्मिणी के कौंडण्यपुर, जहांगीरपुर, पवित्र क्षेत्र चांगापुर, प्राचीन हेमाडपंथी कोंडेश्वर महादेव मंदिर, तपस्थली तपोवनेश्वर सहित सर्वधर्म समभाव वाले सैकड़ों ऐसे धर्मस्थल हैं, जिनका रामायण और श्रीमद् भागवत में भी उल्लेख मिलता है. पंडित प्रदीप मिश्रा शिव महापुराण के प्रखर वक्ता के रूप में जाने जाते हैं. भोलेनाथ की उन पर अपार कृपा ही कही जाएगी कि जहां भी कथा होती है, देशभर से लाखों भक्तों की उपस्थिति रहती है. हजारों स्वयंसेवक भोलेनाथ की सेवा में स्वयं आते हैं.

वैदिक या हिंदू धर्म को इसलिए सनातन धर्म कहा जाता है, क्योंकि यह धर्म है जो ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है. मोक्ष की संकल्पना ही इसी धर्म की देन है.विश्वबंधुत्व, भाईचारा, सभी धर्मों के आदर सिखाने का कार्य धर्म करता है. एकनिष्ठता, ध्यान, मौन और तप सहित यम-नियम के अभ्यास और जागरण का मोक्ष मार्ग है. सर्वे भवंतु सुखिनः का संदेश भी यह देता है. वैदिक काल में उपमहाद्वीप के धर्म के लिए सनातन धर्म नाम मिलता है.सनातन' का अर्थ है - शाश्वत या सदा बना रहने वाला, अर्थात जिसका न आदी है न अन्त. सनातन धर्म मूलतः भारतीय धर्म है, जो भारतीय उपमहाद्वीप तक विश्व के कई भागों में व्याप्त रहा है.ॐ सनातन धर्म का प्रतीक चिह्न ही नहीं बल्कि सनातन परम्परा का सबसे पवित्र शब्द है. यह अक्षर भगवान भोलेनाथ का प्रतिनिधित्व करता है, जो अचर, अमिट और अविनाशी हैं. हनुमानगढ़ी में हो रही यह कथा अंबानगरी के धर्म इतिहास में नई इबारत लिख रही है, जो अभूतपूर्व है.इतना भव्य आयोजन का कुशल प्रबंधन का आदर्श उदाहरण बन सकता है. कथा के आयोजन की सफलता की हार्दिक शुभकामनाएं और सनातन धर्म की जयकार के साथ ही विश्व बंधुत्व की इस तरह की कड़ी सदैव बढ़ती रहे, भोलेनाथ के चरणों में यही कामना. श्री शिवाय नमस्तुभम, ओम नमः शिवाय.

सनातन धर्म के नायक पं.प्रदीप मिश्रा

कुबेरेश्वर धाम सिहोर के माध्यम से मानवता की सेवा में स्वयं को झोंकने के साथ ही पर्यावरण संतुलन सहित अन्य सामाजिक विषयों का धर्म के माध्यम सेप्रचार करने वाले तथा सनातन धर्म पर गर्व करने के साथ ही भारतीय संस्कृति को विश्व में महान बताने वाले अंतर्राष्ट्रीय कथाकार पं.प्रदीप मिश्रा को आज के दौर में सनातन धर्म का नायक कहा जा सकता है. उनकी हर कथाओं में जहां भारत माता और भारतीय संस्कृति का गुणगान रहता है, वहीं वे जिस विश्वास से उपचारों को बताते हैं और लोग इसे स्वीकार करते हैं, वह इस बात का सबूत है कि अगर श्रद्धा है, विश्वास है तो कुछ भी असंभव औघड़दानी के दरबार में नहीं है. वे बिना हिचक यह सब भोलेनाथ के चरणों में समर्पित करते हैं. विदर्भ स्वाभिमान का मानना है कि हमारा देश सदैव महान रहा है. लेकिन समय के साथ ही अपनों की दगाबाजी ने ही मुगलों और अंग्रेजों को यहां मौका दिया.

धर्मो रक्षति रक्षित के सिद्धांत को वे महत्वपूर्ण मानते हैं. उनका कहना है कि जब तुम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा. बच्चों को बचपन से ही मंदिर में जो माता-पिता ले जाएंगे, प्रभु श्रीराम, भोलेनाथ, हनुमानजी, गौमाता के महत्व का चरित्र बताएंगे, वे बच्चे आदर्श इन्सान बनेंगे और माता-पिता को कभी वृद्धाश्रम नहीं छोड़ेंगे. बचपन से ही संस्कार,संयुक्त परिवार, नाते-रिश्ते की महत्ता भी बताने की बात वे कहते हैं. कथा के साथ ही परिवार की खुशियों के पंडित प्रदीप मिश्रा के टिप्स अभूतपूर्व होते हैं. कथाएं सुनकर लाखों परिवारों के जीवन में खुशियां लाने और लाखों भोलेनाथ मंदिरों को नौनिहाल करने वाले शब्दों का जादू भोलेनाथ की कृपा से उन्हें है.

सुभाष दुबे, संपादक
विदर्भ स्वाभिमान, अमरावती.

पेज १ से जारी

अंबानगरी का बना इतिहास

शिव महापुराण कथा में उमड़ेंगे 7 लाख से अधिक भाविक

भाड़ नहीं फोड़ता है. राणा दम्पति एक ओर जनसमस्याओं के लिए सदन में आवाज उठा रहा है, वहीं दूसरी ओर अंबानगरी की शान में चार-चांद लगाने के लिए 20-20 घंटे से अधिक समय तक मेहनत कर रहा है. इतना बड़ा आयोजन मजाक की बात नहीं है. लेकिन यह भी उतना ही सही है कि राणा दम्पति पर संकटमोचन हनुमानजी के साथ ही समस्त देवताओं की कृपा ही है, जो असंभव को सदैव संभव करने का उदाहरण जनता के समक्ष रखते हैं. उनकी सुबह से लेकर रात 12 बजे तथा कई बार इससे आगे की दिनचर्या देखने के बाद कई दांतों तले उंगली दिखाते हैं. उनके चेहरे की जो प्रसन्नता सुबह 7 बजे रहती है, वही प्रसन्नता, लोगों के काम करने की चाहत और उत्साह रात 1 बजे भी अगर रहता है तो इससे बड़ी भोलेनाथ की उन पर और क्या कृपा हो सकती है, यह कहना गलत नहीं होगा. श्रद्धा से विश्वास बढ़ता है और विश्वास से ही आदमी असंभव को भी संभव कर देता है. राणा दम्पति की शादी समारोह से लेकर जीवन में विकास, किसानों की समस्या, हनुमान चालीसा को लेकर तत्कालीन सरकार से भिड़ने का मामला हो, सभी जगहों पर जीतकर ही आए हैं. विधायक राणा तथा नवनीत राणा अक्सर कहते हैं जो राम का नहीं, हनुमान का नहीं, वह किसी काम का नहीं. उनके विश्वास का इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिए. विपरीत स्थितियों में भी स्वयं के लिए रास्ता निकालना कोई राणा दम्पति से सीखे. मध्यम परिवार से संबंध के बाद भी आज जिस मुकाम पर दोनों हैं, वह भी किसी चमत्कार से कम नहीं है.

विदर्भ स्वाभिमान
सभी का साथ,जय भोलेनाथ

अंबानगरी की यह कथा ऐतिहासिक है. हमारे जीवन को धन्य करने वाली तथा भक्तों के जीवन में खुशियां भरने वाली है. उनकी ही कृपा से कथा आयोजन को लेकर जिस तरह से सभी काम हो रहे हैं, यह भोलेनाथ की कृपा से कम नहीं रहने की बात चंद्रकुमार जाजोदिया और सुनील राणा के साथ ही सभी स्वयंसेवकों ने कही. उनके मुताबिक नेक दिल से किया गया कोई भी काम अच्छा प्रतिफल देने का अनुभव तैयारियों के दौरान आया है. सभी कथा का श्रवण कर अपना जीवन धन्य करें. श्री शिवाय नमस्तुभ्यम बोलते रहें और जीवन में आगे बढ़ते रहें.

अंबानगरी बनी धर्मनगरी

अभी तक अंबानगरी में धार्मिकता के कई इतिहास बने हैं. लेकिन पं.प्रदीप मिश्रा की इस विशाल कथा के माध्यम से देशभर के लाखों भक्त यहां पहुंच रहे हैं. लाखों भक्तों के रोज ठहने और भोजन का इंतजाम करने से लेकर लाखों भाविकों के बैठने का मंडप 100 एकड़ क्षेत्र में तैयार होना यह सभी हैरतवाले ही हैं. जिलाधिकारी सौरभ कटियार, पुलिस आयुक्त नवीनचंद्र रेड्डी, ग्रामीण पुलिस के साथ ही प्रशासन द्वारा भी सुचारू तरीके से सम्पन्न कराने के लिए प्रयास रहने की बात विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत में जिलाधिकारी सौरभ कटियार ने दी. साथ ही माना कि यह कथा जिले के लिए किसी इतिहास से कम नहीं होगा. पूरा प्रशासन का जो नियमों के मुताबिक सहयोग हो सकता है, वह सहयोग मिल रहा है.ज़ीवन में जब भी इस तरह का मौका मिले सनातम धर्म मानने वालों को इसमें हरसंभव सहयोग के मामले में भी पीछे नहीं हटना चाहिए, ऐसा आग्रह भी विधायक रवि राणा, सांसद नवनीत राणा ने किया.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881 मोबाइल नं.-*09423426199,8855019189/8208407139*
E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

भगवान शिव के पवित्र 12 ज्योतिर्लिंग

1. सोमनाथ

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग भारत का ही नहीं अपितु इस पृथ्वी का पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है। यह मंदिर गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित है। शिवपुराण के अनुसार जब चंद्रमा को दक्ष प्रजापति ने क्षय रोग होने का श्राप दिया था, तब चंद्रमा ने इसी स्थान पर तप कर इस श्राप से मुक्ति पाई थी। ऐसा भी कहा जाता है कि इस शिवलिंग की स्थापना स्वयं चंद्रदेव ने की थी। विदेशी आक्रमणों के कारण यह 17 बार नष्ट हो चुका है। हर बार यह बिगड़ता और बनता रहा है।

2. मल्लिकार्जुन

आन्ध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नाम के पर्वत पर स्थित है। इस मंदिर का महत्व भगवान शिव के कैलाश पर्वत के समान कहा गया है। अनेक धार्मिक शास्त्र इसके धार्मिक और पौराणिक महत्व की व्याख्या करते हैं। कहते हैं कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने मात्र से ही व्यक्ति को उसके सभी पापों से मुक्ति मिलती है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जहां पर यह ज्योतिर्लिंग है, उस पर्वत पर आकर शिव का पूजन करने से व्यक्ति को अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य फल प्राप्त होते हैं।

3. महाकालेश्वर

मध्यप्रदेश की धार्मिक राजधानी कही जाने वाली उज्जैन नगरी में स्थित है। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की विशेषता है कि ये एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। यहां प्रतिदिन सुबह की जाने वाली भस्मआरती विश्व भर में प्रसिद्ध है। महाकालेश्वर की पूजा विशेष रूप से आयु वृद्धि और आयु पर आए हुए संकट को टालने के लिए की जाती है। उज्जैन वासी मानते हैं कि भगवान महाकालेश्वर ही उनके राजा हैं और वे ही उज्जैन की रक्षा कर रहे हैं।

4. ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध शहर इंदौर के समीप स्थित है। जिस स्थान पर यह ज्योतिर्लिंग स्थित है, उस स्थान पर नर्मदा नदी बहती है और पहाड़ी के चारों ओर नदी बहने से यहां ॐ का आकार बनता है। ॐ शब्द की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है। इसलिए किसी भी धार्मिक शास्त्र या वेदों का पाठ ॐ के साथ ही किया जाता है। यह ज्योतिर्लिंग ओंकार अर्थात ॐ का आकार लिए हुए है, इस कारण इसे ओंकारेश्वर नाम से जाना जाता है।

5. केदारनाथ

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तराखंड में स्थित है। बाबा केदारनाथ का मंदिर बद्रीनाथ के मार्ग में स्थित है। केदारनाथ समुद्र तल से 3584 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। केदारनाथ का वर्णन स्कन्द पुराण एवं शिव पुराण में भी मिलता है। यह तीर्थ भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। जिस प्रकार कैलाश का महत्व है उसी प्रकार का महत्व शिव जी ने केदार क्षेत्र को भी दिया है।

6. भीमाशंकर

भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के पुणे जिले में सह्याद्रि नामक पर्वत पर स्थित है। भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग को मोटेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर के विषय में मान्यता है कि जो भक्त श्रृद्धा से इस मंदिर के प्रतिदिन सुबह सूर्य निकलने के बाद दर्शन करता है, उसके सात जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं तथा उसके लिए स्वर्ग के मार्ग खुल जाते हैं।

7. काशी विश्वनाथ

विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग उत्तर प्रदेश के काशी नामक स्थान पर स्थित है। काशी सभी धर्म स्थलों में सबसे अधिक महत्व रखती है। इसलिए सभी धर्म स्थलों में काशी का अत्यधिक महत्व कहा गया है। इस स्थान की मान्यता है, कि प्रलय आने पर भी यह स्थान बना रहेगा। इसकी रक्षा के लिए भगवान शिव इस स्थान को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेंगे और प्रलय के टल जाने पर काशी को उसके स्थान पर पुन रख देंगे।

8. त्र्यंबकेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग गोदावरी नदी के करीब महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में स्थित है। इस ज्योतिर्लिंग के सबसे अधिक निकट ब्रह्मागिरि नाम का पर्वत है। इसी पर्वत से गोदावरी नदी शुरु होती है। भगवान शिव का एक नाम त्र्यंबकेश्वर भी है। कहा जाता है कि भगवान शिव को गौतम ऋषि और गोदावरी नदी के आग्रह पर यहां ज्योतिर्लिंग रूप में रहना पड़ा।

9. वैद्यनाथ

श्री वैद्यनाथ शिवलिंग का समस्त ज्योतिर्लिंगों की गणना में नौवां स्थान बताया गया है। भगवान श्री वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग का मन्दिर जिस स्थान पर अवस्थित है, उसे वैद्यनाथ धाम कहा जाता है। यह स्थान झारखण्ड प्रान्त, पूर्व में बिहार प्रान्त के संथाल परगना के दुमका नामक जनपद में पड़ता है।

10. नागेश्वर

यह ज्योतिर्लिंग गुजरात के बाहरी क्षेत्र में द्वारिका स्थान में स्थित है। धर्म शास्त्रों में भगवान शिव नागों के देवता है और नागेश्वर का पूर्ण अर्थ नागों का ईश्वर है। भगवान शिव का एक अन्य नाम नागेश्वर भी है। द्वारका पुरी से भी नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की दूरी 17 मील की है। इस ज्योतिर्लिंग की महिमा में कहा गया है कि जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यहां दर्शनों के लिए आता है उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

11. रामेश्वरम

यह ज्योतिर्लिंग तमिलनाडु राज्य के रामनाथ पुरं नामक स्थान में स्थित है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक होने के साथ-साथ यह स्थान हिंदुओं के चार धामों में से एक भी है। इस ज्योतिर्लिंग के विषय में यह मान्यता है, कि इसकी स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। भगवान राम के द्वारा स्थापित होने के कारण ही इस ज्योतिर्लिंग को भगवान राम का नाम रामेश्वरम दिया गया है।

12. घृष्णेश्वर

घृष्णेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास स्थित है। इसे घृष्णेश्वर या घुश्मेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। दूर-दूर से लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं और आत्मिक शांति प्राप्त करते हैं। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से यह अंतिम ज्योतिर्लिंग है। बौद्ध भिक्षुओं द्वारा निर्मित एलोरा की प्रसिद्ध गुफाएं इस मंदिर के समीप स्थित हैं। यहीं पर श्री एकनाथजी गुरु व श्री जनार्दन महाराज की समाधि भी है।

श्री शिव महापुराण कथा

सभी शिव भक्तों का हार्दिक स्वागत!

शुभेच्छुक -
सुदर्शन गांग,
अरुणभाऊ कडू,
प्रदीप जैन तथा
समस्त आनंद परिवार,
अमरावती

व्यंकटेशधाम पूरा करता है श्री गोविंदा भक्तों के अरमान

भक्ती की शक्ती अपार होती है. कहते हैं जहां भाव है, वहीं देव है. कुछ इसी तरह का अनुभव साक्षात्कारी जयस्तंभ चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थित व्यंकटेश धाम में आने वाले भक्तों की मनोकामनाएं जहां पूरी होती हैं, वहीं दूसरी ओर यह मंदिर लाखों भक्तों के लिए अनुभवस्थल है. कई ऐसे भी भक्त हैं, जो बचपन से मंदिर से जुड़े हैं, उन्होंने श्री गोविंदा के आशिर्वाद का अनुभव किया है. मंदिर का प्रबंधन धर्म कार्य के साथ ही मानवता का कार्य करने में भी सदैव अग्रणी रहता है. निश्चल मन की गई भक्ति यहां तत्काल असर दिखाती है. बड़ी संख्या में भाविक ऐसे हैं, जो प्रभु की कृपा का अनुभव कर चुके हैं.

कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है. इसका दिल से अनुभव किया जा सकता है. कई लोग कहते हैं कि भगवान हैं या नहीं है, लेकिन हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हमारे दिल की धड़कनों का संबंध भगवान से है. यही कारण है कि रस्सी खींचते ही हम निष्प्राण हो जाते हैं. जिस तरह से हवा को महसूस किया जाता है, आक्सीजन हमें जिंदा रखती है लेकिन वह दिखाई नहीं देता है. उसी तरह दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है जो दुनिया का संचालन करती है. हमारे कर्मों का हिसाब-किताब करती है. अमरावती शहर ही नहीं तो विदर्भ में सुख्यात जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम लाखों भक्तों का आस्थास्थल है. व्यंकटेशधाम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एड.आर.बी. अटल के नेतृत्व में सभी सेवा समर्पित पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन किया जाना चाहिए, जिनके द्वारा मंदिर की बेहतरीन व्यवस्था की जाती है. सालभर मंदिर में विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. धार्मिकता को मानवता की सेवा का आकार देते हुए अन्नदान जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं. मंदिर के संस्थापक स्व.रतनलाल दायमा भगवान बालाजी के अनन्य भक्तों में से एक थे.पिता की ही तरह गोविंद दायमा, रमण दायमा के साथ ही पूरा दायमा परिवार ही भक्ति में ओतप्रोत रहता है. बाबूजी को तो साक्षात प्रभु का आशिर्वाद प्राप्त था. यह मंदिर लाखों भक्तों को आश्रय देता है. फिलहाल मंदिर की बेहतरीन जिम्मेदारी के निर्वहन में उनके दो रतन रमणभाई दायमा तथा गोविंदजी दायमा ने स्वयं को झोंक दिया है. कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से आत्मविश्वास बढ़ता है. बढ़े हुए आत्मविश्वास के भरोसे ही कठिन से कठिनतर कार्य आसानी से किया जा सकता है. मंदिर की साफ-सफाई से लेकर समय पर अभिषेक, पूजा-अर्चना के साथ ही सभी धार्मिक गतिविधियों को देखकर निश्चित ही गर्व होता है. मंदिर प्रबंधन की सराहना की जानी चाहिए. तमाम सम्पन्नता के बाद भी रमणजी तथा गोविंदजी की विनम्रता निश्चित ही सीख लेने लायक है. मेरा संबंध मंदिर से पिछले पंद्रह साल से है. वैसे तो प्रभु के प्रति अत्याधिक आत्मीयता मेरे पूज्य पिताजी स्व.जमुनाप्रसादजी पारसनाथजी दुबे के समय से ही है. क्योंकि पिताजी के साथ ही भगवान व्यंकटेश के चरणों में जाने का मौका मिला. इसके बाद तो मंदिर को लेकर ऐसे अनुभूति, इतना सुकून तथा संतोष मिला कि अब तो जितने अधिक बार जाऊं, उतना अच्छा है, ऐसा लगने लगा है. कलयुग के तमाम पापों का नष्ट कर जीवन को खुशहाल बनाने वाले भगवान व्यंकटेश बालाजी के साथ ही मां महालक्ष्मी तथा मां पद्मावती के दर्शन का लाभ यहां भक्तों को मिलता है.निर्धारित दिनों के प्रसाद के साथ ही अल्प भजन सप्ताहभर की सकारात्मक उर्जा देने में कारगर होता है. मंदिर प्रबंधन की जितनी सराहना की जाए कम है.

–सौ. विणा दुबे

गड़गड़ेश्वर महादेव पूरी करते हैं भक्तों की कामना

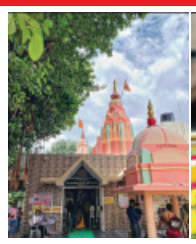

भगवान भोलेनाथ को देवों में महादेव कहा जाता है. वे जहां भोले हैं, वहीं दूसरी ओर अल्प भक्ति में प्रसन्न होने वाले देव हैं. अमरावती शहर में प्राचीन और जागृत मंदिरों में पौराणिक महत्व रखने वाला गड़गड़ेश्वर मंदिर भक्तों की कामनाओं को पूरा करता है. मंदिर में जहां अपार शांति और सुकून का अनुभव भक्त करते हैं, वहीं दूसरी ओर हजारों ऐसे भक्त हैं, जो इस मंदिर से कई वर्षों से जुड़े हुए हैं. भक्तों की मनोकामनाओं को जहां गड़गड़ेश्वर महादेव पूरी करते हैं, वहीं दूसरी ओर शहर ही नहीं तो गड़गड़ेश्वर मंदिर की ख्याति समूचे विदर्भ में जागृत देवस्थान के रूप में है.

यहां गड़गड़ेश्वर महादेव का श्रृंगार करने वाले युवाओं, महिलाओं की टीम सचमुच भाग्यशाली है. वे भोलेनाथ की सेवा में लगे रहते हैं. संस्थान के अध्यक्ष के साथ ही जहां सभी स्वयंसेवक भोलेनाथ की सेवा करते हैं, वहीं इस मंदिर में होने वाले महादेव की आरती मन को प्रसन्न करती है. भक्तों के मुताबिक सदैव दर्शन और आने वाले भक्तों को जीवन में कई चमत्कारी परिणाम दिखाई देते हैं. कई बताते हैं कि दुःखों के पल में जब कोई नहीं रहता है, तब भोलेनाथ रहते हैं. श्रद्धा और अंधश्रद्धा के अंतर को समझने वाले भक्त यहां जहां आते हैं, वहीं स्वयं मानते हैं कि कर्म अगर अच्छा है, सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं तो शिव के दर्शन होना निश्चित है. लाखों भक्तों के आस्थास्थल अकोली रोड स्थिति गड़गड़ेश्वर महादेव मंदिर में रोज हजारों की संख्या में भाविक पहुंचते हैं. प्रभु का श्रृंगार करने के लिए जहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है, वहीं मंदिर का पर्यावरण की दृष्टी से शानदार नजारा भक्तों को प्रसन्नचित करता है. मंदिर जागृत रहने के साथ ही नियमित पूजा-अर्चना तथा आरती में रोज सैकड़ों भाविक शामिल होते हैं.मंदिर से कई वर्षों से जुड़े प्रवीण बुंदेले सहित सैकड़ों युवाओं में भक्ती की शक्ति का एहसास हुआ है. उनका कहना है कि गड़गड़ेश्वर महादेव की शरण में दिल से आने वाला और उनमें विश्वास करने वाला कभी निराश नहीं होता है. केवल आपका विश्वास दृढ़ होना चाहिए. भाव तिथे देव का अनुभव वही कर सकता है, जिसका पूरा विश्वास भगवान भोलेनाथ में हो. यहां पर प्रभु के भक्तों में अपार विश्वास के साथ ही यहां सालभर महाशिवरात्रि के अलावा विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. कार्यक्रमों में सबसे बेहतरीन यहां होने वाली आरती होती है. आरती में शामिल होने वाले हर भक्त का मन तृप्त हो जाता है. शहर ही नहीं बल्कि जिले में यह प्राचीन और पौराणिक मंदिर है. इस स्थान पर मुनियों द्वारा तपस्या करने का जिक्र है. शांत, पर्यावरण से युक्त रहने के अलावा मंदिर का विशाल बरगद का पेड़ सभी भक्तों को शीतल छाया प्रदान करता है. सुबह से लेकर रात की आरती में सैकड़ों भाविक जहां शामिल होते हैं, वहीं मंदिर मेंकई भक्त ऐसे हैं, जिनकी पीढ़ी दर पीढ़ी गड़गड़ेश्वर महादेव की सेवा में लगी हुई है. कईयों के जीवन में भोलेभंडारी ने जहां चमत्कार किया है, वहीं कईयों को मुसीबतों से बाहर निकालने के कारण भक्तों का विश्वास लगातार बढ़ता जा रहा है. इतने ही गड़गड़ेश्वर महादेव भक्तों के भोलेनाथ मंदिर कई लोग कहते हैं कि भगवान हैं या नहीं है, लेकिन हम यह क्यों भूल जाते हैं कि हमारे दिल की धड़कनों का संबंध भगवान से है. यही कारण है कि रस्सी खींचते ही हम निष्प्राण हो जाते हैं.यहां होने वाली आरती अपार सुकून देती है. निश्चित तौर पर इस आरती में शामिल होने का सौभाग्य जिन्हें मिलता है, वे लोग बहुत भाग्यवान होते हैं. दीपावली पर सभी भोले भक्तों को हार्दिक शुभकामनाएं.

–प्रविण बुंदेले, भोलेनाथ भक्त

साक्षात्कार : भोले की भक्ति, देती है सभी को शक्ति

सनातन धर्म, राष्ट्र प्रेम बढ़ाने का कार्य करते हैं पं.प्रदीप मिश्रा

साक्षात्कार लेते हुए सुभाष दुबे, वंशिका दुबे के साथ विधायक रवि राणा.

जीवन में भगवान महादेव को देवों का देव कहा जाता है. वह सभी के मन को जानते हैं. सच्चे दिल से किया गया कोई काम कभी विफल नहीं होने देते हैं. अंबानगरी धार्मिक नगरी है, इसका पौराणिक धार्मिक महत्व है. यहां पर हनुमान चालीसा ट्रस्ट तथा सहयोगियों के माध्यमसे होने वाली कथा भी इतिहास रचेगी. भक्तों से इसका श्रवण कर अपना जीवन धन्य करने का आग्रह कथा के प्रमुख आयोजन विधायक रवि राणा तथा सांसद नवनीत राणा ने किया. उनके मुताबिक यह अमरावती जिले ही नहीं बल्कि विदर्भ और राज्य के लिए किसी गौरव से कम नहीं है. इतने बड़े आयोजन में प्रशासन के साथ ही पुलिस का जिस तरह से सहयोग मिल रहा है, उसको लेकर प्रसन्नता जताते हुए विधायक राणा ने कहा कि प्रभु का कोई काम कभी विफल नहीं हो सकता है. प्रयास करना इन्सान के हाथ में होता है लेकिन उसे मंजिल तक पहुंचाना तो अंततः प्रभु के हाथ में है. अमरावती की यह कथा न भूतो न भविष्यती रहने का विश्वास जताते हुए भाविकों से इसका लाभ लेने का आग्रह किया.

अंतर्राष्ट्रीय कथा प्रवक्त पंडित प्रदीप मिश्रा के रूप में मिले कथाकार को भी भोले ही कृपा बताते हुए विधायक

रवि राणा और नवनीत राणा ने कहा कि बचपन की गरीबी से लेकर कामयाबी की इस मंजिल तक में माता-पिता की सेवा और प्रभु का सदैव आशिर्वाद मिला है. वर्ना इतना बड़ा आयोजन करने की क्षमता उनमें नहीं है. लेकिन भोलेनाथ की कृपा से ही यह सब होने की बात कही. महिलाओं के साथ ही हजारों स्वयंसेवकों द्वारा की जा रही मेहनत का जिक्र करते हुए वे कहते हैं कि अनथक मेहनत कर रहे हैं. दिनरात लगे हुए हैं लेकिन थकान नहीं है. कथा के आयोजन के मन में विचार से लेकर उसे साकार करने तक हर पल सकारात्मक साथ मिलने की बात कही. कथा को अभूतपूर्व बताते हुए उन्होंने कहा कि यह कथा अमरावती जिले की शान में जहां चार-चांद लगाएगा, वहीं आने वाली पीढ़ियों तक के लिए यह आयोजन यादगार रहने का भरोसा जताया. पंडित प्रदीप मिश्रा का बखान करते हुए उन्होंने कहा कि अपार उर्जा का अनुभव उन्होंने उनके सानिध्य में किया. सनातन धर्म के नायक के साथ ही देश में भारतीय संस्कृति, राष्ट्र प्रेम को बढ़ाने के साथ ही युवाओं को व्यसन से बचाने के लिए बचाते हैं. बचपन की गरीबी से लेकर अभी की सम्पन्नता तथा लोगों से मिले प्रेम को अपने जीवन की सबसे बड़ी सौगात बताते हुए विधायक रवि राणा ने कहा कि समाज के कर्ज को लौटाने की दिशा में दस लाख लोगों को दीपावली तथा अन्य पर्वों पर खुशियां बांटने का प्रयास करते हैं. दाता तो प्रभु हैं, वे केवल माध्यम रहने की बात कही. भोलेनाथ की अमरावती में हो रही शिव महापुराण कथा को सफलता की चोटी पर पहुंचाने और कथा का श्रवण कर जीवन धन्य करने का आग्रह जिलेके साथ ही विदर्भ की जनता से किया. साथ ही इस काम में दिन-रात योगदान देने वाले सभी स्वयंसेवकों, मार्गदर्शकों , सहयोगियों के प्रति आत्मीयता प्रकट करते हुए विश्वास जताया कि अमरावती की यह कथा आगामी कई दशकों तक जानी जाएगी.

योजनाकार चंद्रकुमार जाजोदिया का प्रतिपादन

अच्छा करते रहें, आपका कभी बुरा नहीं होगा

श्वेता दुबे/विदर्भ स्वाभिमान

ज़ीवन में जो लोग अच्छा करते हैं, उनका भगवान कभी बुरा नहीं होने देते हैं. अमरावती में हो रही शिव पुराण महाकथा पीढ़ियों को संवारने के साथ ही भारतीय आदर्श संस्कारों को बढ़ावा देने तथा राष्ट्र प्रेम की भावना बढ़ाने की जरूरत है. धर्म तो मानवता, सेवाभाव की सीख देता है. श्री हनुमान चालीसा ट्रस्ट तथा हजारों स्वयंसेवकों के प्रयासों से हो रही यह कथा अमरावती के लिए गौरव की बात है. इसका अधिकाधिक संख्या में भाविक श्रवण कर अपना जीवन धन्य करें, इस आशय का प्रतिपादन कथा के योजनाकार और शहर में नित-नए उपक्रमों को पूरा करने के लिए तन-मन-धन से प्रयासरत रहने वाले समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया ने किया.

कथा के उपलक्ष्य में बातचीत में उन्हों ने कहा कि युवाओं को व्यसन से मुक्त करने तथा आदर्श पीढ़ी के निर्माण के लिए वे राज्यभर में 108 कथाएं आयोजित करने का संकल्प कर चुके हैं और यह कथाएं ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही क्षेत्रों में शुरू हैं. माता-पिता की सेवा और भारतीय आदर्श संस्कारों को सदैव महत्व देने वाले चंद्रकुमार जाजोदिया ने कहा कि आज युवाओं में आदर्श आचार-विचार और संस्कारों को ध्यान में रखते हुए यह आयोजन अभूतपूर्व इतिहास रचेगा.

अंबानगरी तथा अमरावती जिला पौराणिक महत्व वाला जिला है. स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के चरणों से यह जिला पुनीत हुआ है. जीवन में भगवान महादेव को देवों का देव कहा जाता है. वह सभी के मन को जानते हैं. सच्चे दिल से किया गया कोई काम कभी विफल नहीं होने देते हैं. अंबानगरी धार्मिक नगरी है, इसका पौराणिक धार्मिक महत्व है. यहां पर हनुमान चालीसा ट्रस्ट तथा सहयोगियों के माध्यम से होने वाली कथा भी इतिहास रचेगी. भक्तों से इसका श्रवण कर अपना जीवन धन्य करने का आग्रह उन्होंने किया.

पूज्य पंडित प्रदीप मिश्रा की कथाओं की खूबी बताते हुए उन्होंने कहा कि उनकी कथाओं में धर्म के साथ ही समाज सुधार, परिवार सुधार, संयुक्त परिवार की महत्ता जैसे विषयों को शामिल करने के कारण ही उनकी कथा सुनने के लिए लाखों भाविक उमड़ते हैं. वे कहते हैं कि माता सरस्वती की कृपा के साथ ही पूज्य पंडित प्रदीप मिश्रा माता-पिता के भक्त के साथ ही संयुक्त परिवार, आदर्श संस्कार तथा राष्ट्र प्रेम जैसे मुद्दों को अत्याधिक महत्व देते हैं. उनकी हर कथा में उमड़ने वाली भीड़ हमेशा बढ़ना भी उनके लिए भगवान भोलेनाथ की कृपा ही कही जाएगी. उनके मुताबिक यह अमरावती जिले ही नहीं बल्कि विदर्भ और राज्य के लिए किसी गौरव से कम नहीं है. इतने बड़े आयोजन में प्रशासन के साथ ही पुलिस का जिस तरह से सहयोग मिल रहा है, उसको लेकर प्रसन्नता जताते हुए चंद्रकुमार जाजोदिया ने जिलाधिकारी सौरभ कटियार, पुलिस आयुक्त नवीनचंद्र रेड्डी के साथ ही पूरे प्रशासन के प्रति कृतज्ञता जताई. अंतर्राष्ट्रीय कथा प्रवक्त पंडित प्रदीप मिश्रा के रूप में मिले कथाकार को भी शहरवासियों का भाग्य बताते हुए सभी से कथा का लाभ लेने और जीवन धन्य करने का आग्रह किया.

भक्तिधाम मंदिर मानवता की सेवा का बना है केन्द्र

अमरावती-जीवन में सफलता मिलने के बाद आदमी अहंकारी हो जाता है. लेकिन शहर के चोटी के व्यवसायी तथा रघुवीर ग्रुप के संचालक दिलीपभाई पोपट इससे जुदा है. व्यवसाय के क्षेत्र में जहां उन्होंने सफलता के परचम गाड़े हैं, वहीं पिता स्व.मंगलजी भाई पोपट के आदर्श विचारों पर चलते हुए मानवता की अलख जगाने का कार्य कर रहे हैं. मानवता की सेवा को ही ईश्वर सेवा मानने वाले तथा संत जलाराम बाप्पा के अनन्य भक्त, जलाराम सत्संग मंडल के अध्यक्ष के रूप में भक्तिधाम मंदिर में मंडल द्वारा शुरू किए गए विभिन्न उपक्रमों तथा इसका लाभ लेते सैकड़ों जरूरतमंदों को देखकर निश्चित ही खुशी होती है. तमाम व्यस्तता के बाद भी दिलीपभाई सहपरिवार जिस तरह से इसमें योगदान देते हैं, उसका दर्शन गुरूवार 7 नवंबर को हुआ.

कहते हैं कि मानव सेवा से बड़ी सेवा कोई नहीं होती है. हर इन्सान को जब नारायण के रूप में देखा जाता है तो निश्चित ही अलग आनंद मिलता है. बडनेरा रोड स्थिति भक्तिधाम मंदिर में हर गुरूवार को सैकड़ों जरूरतमंदों के भोजनदान का कार्यक्रम सचमुच अनोखा रहता है. तमाम व्यस्तता के बाद भी सहपरिवार दिलीपभाई पोपट तथा मंडल के सभी पदाधिकारी तथा सदस्यों द्वारा दी जा रही सेवा अनुकरणीय है. साथ ही इसी तरह का रवैया अगर देश के सभी मंदिर प्रबंधनों द्वारा अदा किया जाए तो निश्चित तौर पर देश में कोई भी गरीब भूखे पेट नहीं सोए. गुरूवार को दोपहर 1 बजे के बाद से शुरू हुआ महाप्रसाद का यह सिलसिला तीन बजे तक चला. इस दौरान सर्मपित भाव से जहां जलाराम सत्संग मंडल के पदाधिकारियों, सदस्यों ने साथ दिया, वहीं इस दौरान कार्यकर्ताओं का उत्साह भी देखने लायक था. भक्तिधाम मंदिर के साथ ही जलाराम सत्संग मंडल के सभी पदाधिकारियों की सराहना की जानी चाहिए. धार्मिकता को भी किस तरह मानव सेवा का रूप दिया जा सकता है, इसका यह प्रयास निश्चित ही सराहनीय है. इसे हमारा सलाम.

सनातन धर्म की रक्षा में अग्रणी शक्ति महाराज

अमरावती जिले कोधर्म नगरी कहा जाता है.यहां पर जहां विभिन्न मंदिरों द्वारा धार्मिक कार्य को अंजाम दिया जाता है वहीं दूसरी ओर सामाजिक और मानवता वाले कामों में भी यह संस्थान प्रयासरत रहते

भारतीय की जिम्मेदारी है.सभी भारतीयों को गौ माता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी ओर से योगदान देना चाहिए.अमरावती में आयोजित हो रहीश्री

हैं.बचपन से ही मां महाकाली के अनन्य भक्त पूज्य शक्ति महाराज भी धार्मिकता को सामाजिक और राष्ट्र के उत्थान तथा गरिमा के लिए की जान से प्रयासरत हैं.माता महाकाली शक्तिपीठ के पीठाधीश्वर के रूप मेंजहां वे हिंदू धर्म तथा सनातन धर्म के विकास के लिए प्रयासरत हैं,वहीं दूसरी ओरगौ माता की सुरक्षातथा गौ माता को राष्ट्रीय दर्जा दिलाने तथा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राज्य से लेकर केंद्र सरकार तक प्रयासरत हैं.गृह मंत्रालय की जिम्मेदारी संभालने वाले देवेंद्र फडणवीस से लेकर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी तक उन्होंने इस दिशा में प्रयास किया है.

पूज्य शक्ति जी महाराज का कहना है कि राष्ट्र धर्म तथा मानवता की सेवा सभी इंसान का प्रथम फर्ज है.विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए पूज्य शक्ति महाराज ने कहा किदेश की तरक्की के लिए हर व्यक्ति का राष्ट्र के प्रति समर्पण होना अत्यधिक जरूरी होता है.अभी तक हजारोंगौ माता को जीवन दान दिलाने मेंमहत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले शक्ति महाराज के मुताबिक गौ माता की सुरक्षा हर शिव पुराणकथा कोधर्म नगरी अंबा नगरी के लिए अभूतपूर्व बताते हुए इसके आयोजकों की जहां सराहना कीवहीं दूसरी ओर सनातन धर्म की मजबूती के लिए यह अत्यधिक जरूरी रहने की बात कही.गांव में बढ़ते व्यसन को चिंता का विषय बताते हुए उन्होंने कहा किआजयुवा पीढ़ी अगर मजबूत रहेगी तो भारत को पूरे विश्व में महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता है.शक्ति जी महाराज ने कहा कि भारत भूमि यह पवित्र भूमि है यहां जन्म मिलन बड़ी पुण्य की बात है.यह वह पवित्र देश , गंगा बहती है.अमरावती में हो रही शिव महापुराण कथा ऐतिहासिक और अभूतपूर्व रहने का विश्वास जताते हुए शक्ति महाराज ने कहा किअमरावती के इतिहास में यह आयोजन स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा.उन्होंने भक्तों से इस धर्म का आयोजन में योगदान देने और इसे अभूतपुर बनाने में सहयोग देने का आग्रह करते हुएलाखों भक्तों सेशिव महापुराण कथा का लाभ लेकर अपना जीवन धन्य करने का अनुरोध किया.

सनातन धर्म है हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म

शब्दों से भी किसी को चोट नहीं पहुंचाने की सीख देता है मानवता, भाईचारा और सभी को प्रेम करना सिखाता है

जो धर्म किसी को भी शब्दों से भी किसी के दिल को नहीं दुखाने की सीख देता है, वह सनातन धर्म जिसे हिन्दू धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहा जाता है.भारत की सिन्धु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिह्न मिलते हैं. इनमें एक अज्ञात मातृदेवी की मूर्तियाँ, शिव पशुपति जैसे देवता की मद्राएँ, लिंग, पीपल की पूजा, इत्यादि प्रमुख हैं. इतिहासकारों के एक दृष्टिकोण के अनुसार इस सभ्यता के अन्त के दौरान मध्य एशिया से एक अन्य जाति का आगमन हुआ, जो स्वयं को आर्य कहते थे और संस्कृत नाम की एक हिन्द यूरोपीय भाषा बोलते थे. एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग स्वयं ही आर्य थे और उनका मूलस्थान भारत ही था.प्राचीन काल में भारतीय सनातन धर्म में गाणपत्य, शैवदेव, कोटी वैष्णव, शाक्त और सौर नाम के पाँच सम्प्रदाय होते थे. गाणपत्य गणेशकी, वैष्णव विष्णु की, शैवदेव, कोटी शिव की, शाक्त शक्ति की और सौर सूर्य की पूजा आराधना किया करते थे. पर यह मान्यता थी कि सब एक ही सत्य की व्याख्या हैं. यह न केवल ऋग्वेद परन्तु रामायण और महाभारत जैसे लोकप्रिय ग्रन्थों में भी स्पष्ट रूप से कहा गया है. प्रत्येक सम्प्रदाय के समर्थक अपने देवता को दूसरे सम्प्रदायों के देवता से बड़ा समझते थे और इस कारण से उनमें वैमनस्य बना रहता था. एकता बनाए रखने के उद्देश्य से धर्मगुरुओं ने लोगों को यह शिक्षा देना आरम्भ किया कि सभी देवता समान हैं, विष्णु, शिव और शक्ति आदि देवी-देवता परस्पर एक दूसरे

के भी भक्त हैं. उनकी इन शिक्षाओं से तीनों सम्प्रदायों में मेल हुआ और सनातन धर्म की उत्पत्ति हुई. सनातन धर्म में विष्णु, शिव और शक्ति को समान माना गया और तीनों ही सम्प्रदाय के समर्थक इस धर्म को मानने लगे. सनातन धर्म का सारा साहित्य वेद, पुराण, श्रुति, स्मृतियाँ, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि संस्कृत भाषा में रचा गया है.कालान्तर में भारतवर्ष में मुसलमान शासन हो जाने के कारण देवभाषा संस्कृत का ह्रास हो गया तथा सनातन धर्म की अवनति होने लगी. इस स्थिति को सुधारने के लिये विद्वान संत तुलसीदास ने प्रचलित भाषा में धार्मिक साहित्य की रचना करके सनातन धर्म की रक्षा की.

जब औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन को ईसाई, मुस्लिम आदि धर्मों के मानने वालों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिये जनगणना करने की आवश्यकता पड़ी तो सनातन शब्द से अपरिचित होने के कारण उन्होंने यहाँ के धर्म का नाम सनातन धर्म के स्थान पर हिंदू धर्म रख दिया. हिन्दू सहिष्णु और सभी को लेकर चलने और विश्वबंधुत्व की भावना को बढ़ाने में सदैव से विश्वास करते आए हैं.

सनातन में आधुनिक और समसामयिक चनौतियों का सामना करने के लिए इसमें समय समय पर बदलाव होते रहे हैं, जैसे कि राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि ने सती प्रथा, बाल विवाह,अस्पृश्यता जैसे असुविधाजनक परंपरागत कुरीतियों से असहज महसूस करते रहे.इन कुरीतियों की जड़ो (धर्मशास्त्रो) में मौजूद उन श्लोको - मंत्रो को 'क्षेपक' कहा या फिर इनके अर्थो को बदला और इन्हें त्याज्य घोषित किया तो कई पुरानी परम्पराओं का पुनरुद्धार किया. जैसे विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि. यद्यपि आज सनातन का पर्याय हिन्दू है पर सिख, बौद्ध, जैन धर्मावलम्बी भी सनातन धर्म का हिस्सा हैं, क्योंकि बद्ध भी अपने को सनातनी कहते हैं. यहाँ तक कि नास्तिक जोकि चार्वाक दर्शन को मानते हैं वह भी सनातनी हैं. सनातन धर्मी य के लिए किसी विशिष्ट पद्धति, कर्मकांड, वेशभूषा को मानना जरूरी नहीं. बस वह सनातनधर्मी परिवार में जन्मा हो, वेदांत, मीमांसा, चार्वाक, जैन, बौद्ध, आदि किसी भी दर्शन को मानता हो बस उसके सनातनी होने के लिए पर्याप्त है. सनातन धर्म की गुत्थियों को देखते हुए कई बार इसे कठिन और समझने में मुश्किल धर्म समझा जाता है. हालांकि, सच्चाई तो ऐसी नहीं है, फिर भी इसके इतने आयाम, इतने पहलू हैं कि लोग-बाग कई बार इसे लेकर भ्रमित हो जाते हैं. सबसे बड़ा कारण इसका यह कि सनातन धर्म किसी एक दार्शनिक, मनीषा या ऋषि के विचारों की उपज नहीं है, न ही यह किसी ख़ास समय पैदा हुआ. यह तो अनादि काल से प्रवाहमान और विकास मान रहा. साथ ही यह केवल एक दृष्टा, सिद्धांत या तर्क को भी वरीयता नहीं देता.

विज्ञान जब प्रत्येक वस्तु, विचार और तत्व का मूल्यांकन करता है तो इस प्रक्रिया में धर्म के अनेक विश्वास और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं. विज्ञान भी सनातन सत्य को पकड़ने में अभी तक कामयाब नहीं हुआ है किंतु वेदांत में उल्लेखित जिस सनातन सत्य की महिमा का वर्णन किया गया है विज्ञान भी कई बार अचंभित हुआ है.हमारे ऋषि-मुनियों ने ध्यान और मोक्ष की गहरी अवस्था में ब्रह्म, ब्रह्मांड और आत्मा के रहस्य को जानकर उसे स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया था. वेदों में ही सर्वप्रथम ब्रह्म और ब्रह्मांड के रहस्य पर से पर्दा हटाकर 'मोक्ष' की धारणा को प्रतिपादित कर उसके महत्व को समझाया गया था. मोक्ष के बगैर आत्मा की कोई गति नहीं इसीलिए ऋषियों ने मोक्ष के मार्ग को ही सनातन मार्ग माना है

बाबूजी के आदर्श

जीवन में जब भी किसी नेक काम में सहयोगी बनने का मौका मिले तो उसका निस्वार्थ भाव से लाभ उठाना चाहिए। जीवन में इस तरह के मौके बार-बार नहीं आते हैं....

विशेष सहयोग

सुदर्शन गांग,आनंद परिवार
पुरणसेठ हबलानी,
आराधना परिवार
पं. सत्यप्रकाश दुबे
राजेश बनारसे
हेमंतकुमार पटेरिया
अजय मोरय्या
प्रमोद पांडे

साज-सज्जा
संजय भोपाळे

एक प्रसिद्ध कथावाचक गायक और आध्यात्मिक गुरु है पंडित प्रदीप मिश्राजी

कार नहीं संस्कारों से संवरता है राष्ट्र, आचार-विचार तथा संस्कारों का जीवन में अहम् महत्व

भारतीय कथाकारों का ईतिहास बदलनेवाले तथा अपने टोटके के चलते करोड़ों लोगों के जीवन में बदलाव लानेवाले पंडित प्रदीप मिश्रा भारत के ऐसे कथाकार हैं जिनके शब्दों का पालन करोड़ों लोग करते हैं। सब समस्या का हल, एक लोटा जल के माध्यम से बच्चो से लेकर युवाओं तक में भक्तीभाव का संचार करनेवाले पंडित प्रदीप मिश्रा पर भोलेनाथ की अपार कृपा रहने की बात अगर कही जाए तो यह शायद गलत नहीं होगी। मोबाईल के आधुनिक दौर में जहां आज बचपन से ही युवा पीढी गलत मार्गों पर तथा व्यसन में अधिक डुबी हुई है. ऐसे समय कथाओं के माध्यम माता-पिता का महत्व, राष्ट्र की सर्वोपरी स्थिती, युवाओं को परिवार के प्रति जवाबदेह बनाने, संस्कारों को जीवन संवारने का माध्यम बताने के साथ ही यह उनकेही शब्दों का चमत्कार माना जाना चाहिए। जब करोड़ो लोग उनके शब्दों के चलते भगवान भोलेनाथ की भक्ती में जहां डुबे है वहीं आज अगर पांच साल का बच्चा अपने हाथ में एक लोटा जल लेकर अगर किसी भोलेनाथ के मंदिर में जाता है, मंदिर की सफाई करता है और जल चढाता है तो निश्चित तौर पर भावी पीढी न केवल संभलेगी बल्की किसी माता-पिता को वृध्दाश्रम में भेजने का कुसंस्कार उनके नहीं आएगा। रिश्ते और परिवार की एकता के साथ ही संयुक्त परिवारआदर्श पीढी के निर्माण में किस तरह कारगर होता है इसका आदर्श उदाहरण पर्यावरण संतुलन सहीत सामाजिक तथा मानवीय सेवा के लिए समर्पित पंडित प्रदीप मिश्रा ने प्रस्तुत किया है।

पंडित प्रदीप मिश्रा जी, सीहोर वाले, एक प्रसिद्ध कथावाचक गायक और आध्यात्मिक गुरु हैं। उनकी कथाओं के माध्यम से वे लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाते हैं और उन्हें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। कुबेरेश्वर धाम को भी उन्होंने धर्म के साथ ही मानवता की सेवा के केंद्र के रुप में विकसित किया है। रोज लाखों लोगों को यहां भोजनदान की व्यवस्था की जाती है। देशभर से लोगों द्वारा दी जानेवाली मदद की पाई पाई का हिसाब जहां रखां जाता है वहीं दुसरी ओर सामाजिक कार्यों पर भी करोड़ों रुपये खर्च किए जाते है। इसकी भी सराहना की जानी चाहिए।

अपने कथा के माध्यम से लोगों के जीवन में अमूल्य परिवर्तन लाते हैं और उन्हें सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा भी देते हैं। पंडित प्रदीप मिश्रा जी के द्वारा दिये गए कथाओं के माध्यम से वे लोगों को आध्यात्मिक दिशा में मार्गदर्शन करते हैं और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं। पंडित प्रदीप मिश्रा का अपना यूट्यूब चैनल भी है, जहां वह प्रवचन देते हैं। इसके साथ ही, उनका प्रोग्राम आस्था चैनल पर भी प्रसारित किया जाता है। सीहोर वाले श्री प्रदीप मिश्रा के ज्यादातर प्रवचन कथा शिव पुराण से संबंधित होती हैं और पंडित मिश्रा जी ने कथा वाचन भी शिव पुराण से ही शुरू किया था

प्रदीप मिश्रा एक प्रसिद्ध कथावाचक और भजनकार हैं, जो भारत और दुनिया भर में जाने जाते हैं। वे अपने भजनों के माध्यम से लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके प्रवचन भी लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाते हैं, और उनकी कथाएं विदेशों में भी लोकप्रिय हैं, जहां लोग उनका प्रोग्राम सुनने के लिए उनके पीछे जाते हैं। विश्वभर में उनका नाम एक प्रमुख कथाकार के रूप में मान्यता प्राप्त करता है, और जब वे प्रवचन देते हैं, तो उनके शब्द गहरे और मूल्यवान होते हैं।

भक्तों का दुःख हरती हैं मां अंबा-एकवीरा देवी

श्री अंबादेवी मंदिर शहर के मध्य में गांधी चौराहे पर स्थित है। यह बहुत पुराना मंदिर है और इसका उल्लेख पुराने गजेटियर्स में भी मिलता है। इस मंदिर में जीवन के सभी वर्गों और भारत के विभिन्न हिस्सों से लोग आते हैं। दशहरा उत्सव से ठीक पहले पड़ने वाला दशहरा उत्सव लोगों और मंदिर प्राधिकारियों द्वारा उल्लास और सद्भाव के साथ मनाया जाता है। इन नौ दिनों के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर बड़ा मेला आयोजित किया जाता है जिसमें समाज के सभी वर्गों के लोग समान उत्साह के साथ आते हैं। आस-पास के विभिन्न होटलों में पर्याप्त संख्या में ठहरने की अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। कैसे पहुंचें - यह अमरावती रेलवे स्टेशन से पश्चिम की ओर १ किमी और १.५ किमी दूर है। अमरावती बस स्टैंड से. अमरावती रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड से पर्याप्त संख्या में स्थानीय वाहन और टैक्सियाँ उपलब्ध हैं। वाहन और टैक्सियाँ बडनेरा रेलवे स्टेशन (मुंबई-कलकत्ता रेल मार्ग पर) से भी उपलब्ध हैं।

विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी कृष्ण के साहस की कहानियाँ सुनती हैं। उसे उससे प्यार हो जाता है. उसका भाई रुक्मिया, रुक्मिणी का विवाह अपने मित्र चेदि के राजा शिशुपाल से तय करता है।रुक्मिणी गुप्त रूप से कृष्ण को एक संदेश भेजती है, और साथ में वे भागने की योजना बनाते हैं। शिशुपाल से विवाह से एक दिन पहले, रुक्मिणी देवी एकवीरा के मंदिर जाती हैं। (यह अमरावती, महाराष्ट्र में है) यहीं कृष्ण रुक्मिणी का अपहरण कर लेते हैं। अन्य यादवों की मदद से, कृष्ण ने रुक्मिणी के भाई रुक्मिया को हरा दिया। राजा भीष्मक बाद में विवाह समारोह की व्यवस्था करते हैं।यह दोनों मंदिर विदर्भ के जागृत मंदिर के रुप में पहचाने जाते हैं। – **ओमप्रकाश त्रिपाठी**